प्रातः क्लास पिता श्री ओमशान्ति 19-11-67

रिकार्ड,-यह वक्त जा रहा हैः- ओमशान्ति। रूहानी बच्चों ने गीतका भी अर्थ समझा। जिसमानी बच्चे
नहीं समझते हैं। रूहानी बच्चे ही समझ सकते हैं। बापकहते हैं एक मिनट, सेकन्ड पास होता है आयु कम
होते जाते हैं। इस समय की तुम्हारी आयु बहुत वेल्युएबुल है। एक सेकन्ड भी तुम्हारा फालतू न
जाना चाहिए। परन्तु सेकन्ड ब सेकन्ड कोई याद नहीं करते। बाप ने यह भी कहा है गृहस्थ व्यवहार
में भी रहना है। गृहस्थ माना ऐसे नहीं विकार में रहना है। गृहस्थ माना बाल बच्चों परिवार में रहना
है। यहां इतने सब कैसे आये बैठेंगे। तुम बच्चे जानते हो इस समय हम ईश्वरीय परिवार में साथ हैं।
बाबा भी साथ में है। जब दूर रहते हैं फिर ऐसे तो नहीं कहेंगे बाबा के साथ है। बाबा आबु में बैठा
है। यहां तो बाप सम्मुख कहते हैं बच्चे सेकन्ड ब सेकन्ड आयु कम होती जाती है। बाकि थोड़ा टाईम है।
उनको सफल करना है। उठते बैठते चलते फिरते जितना हो सके याद में रहना है। भल बाप कहते हैं ऐसी
स्थाई अवस्था पिछाड़ी में होगी। अब किसकी भी हो नहीं सकती। भल कोई कितना भी पुरुषार्थ
करे परन्तु हो नहीं सकता। बाप टीचर गुरु हमको पढ़ाते हैं। यह भी कैसे, बिलकुल समझते नहीं। रुपये से एक
पाई समझते हैं। तो पद भी पाई जैसे पावेंगे। उन्हों को पद आद की कोई प्रवाह हा नहीं है। पिछाड़ी में
जानेंगे बाप कौन है। अभी तो साधारण तन में है ना। बाप समझाते हैं बहुत जन्मों के अन्त के जन्म
में प्रवेश करता हूं। और कोई कह न सके कि देह के सर्व सम्बन्ध छोड़ अपन को आत्मा समझ मुझे याद
करो। बाप ही बच्चों को कहते हैं। बाकि दुनिया के मनुष्य इन बातों को क्या जाने। इसलिए बाबा बाहर
जाने की भी छुट्टी नहीं देते हैं। क्योंकि है जैसे बन्दर और बन्दरियां। कुछ भी समझते नहीं। शंकराचार्य जो
अपन को श्री श्री 108 जगदगुरु कहलाते हैं, परन्तु बाप ने कहा हैंयह हिरण्यकशिपु है। आसुरी सम्प्रदाय हैं।
~~उन्हों के फालोअर्स भी ऐसे रहते। बाप कहते हैं उन्हों को कुछ भी पता नहीं है कि यह दैवी सम्प्रदाय~~
बन रहे हैं। तुम्हारे में भी बहुत हैं जिनको पता नहीं हैं कि हम क्या बन रहे हैं। नम्बरवार हैं ना। कितना
डिससर्विस भी कर लेते हैं। क्रोध का भूत बड़ा भारी भूत है। यह भी बहुतों में है। 100% क्रोध का भूत देखना
हो तो यहां देखो। सब अवगुण हैं। जैसे कि कुछ भी सुधरते नहीं। आपस में बात-चीत ऐसे करते हैं जैसे ज़हर
फेंकते हैं। पिछाड़ी में सबको सा0 होगा हम क्या पद पावेंगे। सज़ाएं भी कोई कम थोड़े ही होती हैं। पाई पैसे
का भी पद नहीं पाये सकेंगे। परन्तु उन्हों को पद का भी प्रवाह नहीं है। जैसे कि जीते हुये मुर्दे हैं। चलन
ऐसी है बात मत पूछो। अज्ञान काल में भी कोई को 5 बच्चे होते हैं, तो कहते हैं सच्चे2 बच्चे सिर्फ दो हैं।
जो ही आज्ञाकारी हैं। यह बाप तो कहते हैं हमारे पास सेकड़ों हजारों हैं, जो फरमानबरदार अच्छे बच्चे हैं वह
अपने सर्विस में मस्त रहते हैं। बाकि त डिससर्विस में ही मस्त रहते हैं। बाहर सेन्टर्स में भी ऐसे हैं। बहुत हैं जो
डिस सर्विस करते हैं। तंग करने वाले भी तो बहुत हैं ना। भावी ड्रामा की कुछ ऐसी है। बहुत मीठा शान्त,
कम बोलना, रायल बोलना होना चाहिए। राजाएं कितने रायल होते हैं। राजाएं सारा दिन तीक2 नहीं करते।
बहुत थोड़ा बोलते हैं। जैसे पादरी लोग घूमने जाते हैं, कितना सायलेंस में घूमने जाते हैं। क्राईस्ट या
क्राईस्ट के बाप की याद में घूमने जाते हैं। यहां भी घूमने जाते हैं तो भी सिवाय पराई पचर के कुछ जानते
ही नहीं। हडी ज्ञान वाले सर्विसएबुल बच्चों को तो देखने से ही दिल खुश होती है। बाप को तो खुशबुदार
फूल चाहिए। कांटों को तो नही देखेंगे। बाप को तो फिर भी समझाना पड़ता है कुछ तो सुधरे। क्लास
में आने की भी तमीज़ चाहिए ना। बाप कहां से आये पढ़ाने। पहले तो तरस आना चाहिए बाबा
को हम कहां से बुलाते हैं। तुम रहते ही हो पतित दुनिया में। बुलाते हो हे पतित पावन, दूर देश के रहने
वाले आओ। इस पतित पुरानी दुनिया में। हमको आकर फूल बनाओ। यह लक्ष्मी नारायण बनना कोई
मासी का घर है क्या। विश्व का मालिक बनना है। कुछ भी समझते नहीं हैं। तो पुरुषार्थ भी नहीं करते।

जैसे कि पुरुषार्थ नां करने की कसम उठाई है। बाबा तो रात दिन कितना समझाते रहते है। बच्चे समय बहुत थोडा है। उमर घटती जाती है। 8-9 वर्ष तो बाबा कहते है परन्तु तैयारी तो जैसे कि हुई ही पडी है। गुस्से को अन्दर मे दबाते रहते है। तुम जानते हो कि हमारे ही खातिर यह मिसाईल्स आद सब तैयार हुये है। मनुष्य भी समझते जावेंगे। बच्चो को डायरेक्शन मिलता है फिर अमल मे नही लाते है तो समझा जाता है कि शायद अभी देरी है। बाबा ने कहा है कि गीता का भगवान कौन वह अखबार मे डालो। ऐरोप्लेन से गिराओं। गीता का भगवान शिव है यह भूलने से ही दुनियां की दुर्गति हुई है। भक्ति मार्ग तो है ही दुर्गति मार्ग। वो लोग तो समझते है कि भक्ति के बाद भगवान मिलता है। यह तो ठीक ही है। भक्ति जब पुरी होगी तो भगवान आकर भक्तो का फल देंगे। भगवान को ही तो फल देना है। श्री-श्री 108 जगत गुरुओ को तो नही देना है। सर्व का सदगति दाता है ही एक। फिर यह कहां से आये। ढेर गुरु है। आगारवान को भी गुरु कहते है। क्या वो सदगति करते है।, अन्धश्रधा है नां। कितना उनका मान है। आगाखान को प्रिन्स भी कहते है। अब प्रिन्स तो राजा का बच्चा होता है। यह तो सिर्फ शाहुकार है इसलिय ही प्रिन्स कहते है। कृष्ण को भी प्रिन्स नही महाराजा कहना चाहिय। प्रिन्स अक्षर तो अंग्रेजी का है। तुम्हारा अक्षर-2 राईट निकलना चाहिये। प्रिन्स तो कोई भी नही। राजाई भी है नही। अगर है भी तो वो टाईटल खरीद किया हुआ है। सतयुग मे तो कहते है महारानी महाराजा। राम-सीता को राजा राम कहेंगे। यहां तो समझते कुछ भी नही है जो आता है सो बोलते रहते है। संसकृत भाषा तो वास्तव मे है नही। बाप संस्कृत मे थोडेई सुनाते है। फिर तो सबको संस्कृत सीखने लिय बनारस कालेज मे बैठना पडे। अबलाये कैसे सीख सकेगी। हिन्दी भाषा तो कितनी सीधी है। बाप कहते है कि हम तो हिन्दी मे ही समझाते है। संस्कृत भाषा तो यह रथ ही नही जानता है तो शिव बाबा फिर कैसे बोलेंगे। जो रथ की भाषा होगी उसमे ही समझावेंगे। यह सब तुम बच्चो की समझानी की बाते है। जो यह जानते है वो ही बाप बताते है। वो ही भाषा चलती है। सिन्धी भाषा हो तो और लोग तो आवे ही नही। सिन्धी फिर भी मैनारटी मे है। हिन्दी तो मैजारटी मे है। ऐसे भी नही है कि सतयुग मे हिन्दी ही होगी। वहाँ तो तुम्हारी अपनी ही भाषा होगी। बाप आया, समझाया तो हिन्दी भाषा का पार्ट पुरा हुआ। फिर तो जोक वहां की भाषा होगी वो ही होगी। फिर राम राज्य मे भाषा बदली हो जोव ऐसा हो सकता है। शायद एक ही भी चलती हो। समय पर जो होगा सो देखा ही जावेगा। बाबा पहले से ही नही बता देंगे। तुम चलते चलो। यह तो जानते ही हो कि टोटली विनाश तो होने का ही है। गाया हुआ भी है कि राम गयो रावण गयो... कोई-2 अक्षर निकल आते है। देवी देवता धर्म भी प्रायः लोप है। बाकी चित्र है। अब तुम बच्चो को समझ मे आता है कि इतना समय है हम डबल सिरताज धारी बने है। फिर इतना समय सिंगल ताज होगा। फिर नो ताज। अभी तो जो भी थोडा जरा पुंजा पैस मिलती है वो भी खत्म हो जावेगा। नाम-मात्र टाईटल खरीद कर अपने को राजा कहलावे यह भी कैनसिल हो जावेगा। कहेंगे हम नही देंगे। फिर कोई कर ही क्या सकते है। कायदेक को तो फिराते ही रहते है। दिन प्रति दिन नीचे गिरते ही जाते है। तुम बच्चो को तो ऐक्यूरेट पता है। यह दुनियां जो कुछ भी अभी देखने मे आती है वो तो गई ही कि गई। तुम्हारी आयु दिन प्रति-दिन कम ही होती जाती है। याद से आयु बढ़ेगी। तंदरुस्ती भी बनेगी। तुम जानते हो कि हम देवी देवतोय बहुत ही तंदरुस्त थे। कब भी बिमार नही पड़ते थे। बाप कितनी सहज बाते बताते है कि बच्चे अपने को आत्मा समझ कर याद मे रहो। अब याद से ही तुम पतित से पावन बनेंगे। वो तो कह देते है कि गंगा पतित पावनी है। फिर कहते है कि पतित पावन सीता राम... एक बात पर ही ठहरते नही है। शास्त्र आद बहुत पड़े हुये है परन्तु अर्थ तो बुधी मे कुछ भी नही है। सिर्फ कहते है कि शास्त्रवाद करो।

तुम कहते हो कि शास्त्र तो सभी है ही भक्ति मार्ग के। हम तो शास्त्रो का नाम ही नही लेते है। तो
शास्त्रवाद हम कैस कर सकते है। शास्त्रो को तो हम जानते है कि वो सब भक्ति मार्ग के शास्त्र है। हम जानते
है। परतु समझते भी है कि वो सारी भक्ति मार्गकी सामीग्री है। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है।
वो ही आकर ज्ञान देते है। यह है ही रुहानी नालेज। अगर नालेज ही नही मिलती तो तुम यहां पर क्यो
आते? यह बहुत समझने की बाते है। आगे चलकर तो यह शंकराचार्य आद सभी तुम बच्चो के आगे झुकेंगें।
शिव बाबा के आगे नही। वो तो गुप्त है नां। तुमको ही मैसेज देना है। अहो प्रभु तेरी लीला कहते है परन्तु
प्रभु क्या करते है वो तो जानते ही नही है सिवाय तुम ब्रह्मणो के। प्रभु की गत मत कैस न्यारी है सो तो
तुम्ही जानते हो। भगवान पढाते है तो पढाई को ही पुरी रीती लग जाना चाहिय नां। यां कि दुसरे धन्धे
आद मे लगना चाहिये? समझते हो नां वो नालेज अच्छी वां यह नालेज अच्छी जिससे ही तुम विश्व का
महाराजकुमार बनते हो। जरुर कहेंगें कि यह नालेज अच्छी है। फिर भी पढ़ते नही है तो समझा जाता है
कि इनकी तकदीर मे ही नही है। समझते भी है कि यह नालेज हमको कितना ऊंचा बनाती है। उसपाई
पैसे कि नालेज से तो अन्धे ही बनते है। तुम सबको रास्ता बताते हो। मनुष्य तो रिचक भी नही जानते
है। तुम्हारे मे भी बहुत है जो कि ड्रामा को ही नही जानते है। कैसा तो वण्डर है। जरा सा भी पुरुषार्थ
नही करते है। देह-अभिमन मे जो फसे रहते है तो वो क्या जाने इस नालेज को। जिनके पास धन
बहुत है कहते है कि वो तो स्वर्ग मे ही बैठे है। वो क्या जाने नर्क और स्वर्ग को। भगवान बाप पढाते
है तो उनकी तो कितनी वैल्यु रखनी चाहिये। शिव बाबा हमको पढाते है । हम उनके स्टुडण्टस है यह भी
याद रहे तो भी कितनी उन्निती हो जोव। कोई तो एक मिन्ट भी याद नही करते है। तब बाबा कहते रहते है
कि समय चलता जा रहा है। अपनी उन्निती करते रहो। बात-चीत तो ऐस करते है जैस कि फूंक देते रहते
है। शिव बाबाको तो फूंक नही लगतीहै। फूंक लगती ही है जिसमे कि शिव बाबा प्रवेश करते है। बाप ही
आकर इनमे पढाते है। कितनी बडी आसामी है। इनका यादगार सोमनाथ का मन्दिर तो देखो कितेन हीरो
जवाहरो से बनाया हुआ है। कितने तो जवाहरात थे। सोना चांदी तो उस समय बिलकुल ही डैम-चैप था।
सोने चांदी के तो मकान बनते थे। मन्दिर से ही कितेन जवाहर ले गये। मकानो मे भी हीरे मोती जडे हुये
थे। दिल मे खयाल आता है कि क्या वो राग फिर होगा। हम अभी पुरुषार्थ कर रहे है विश्व का मालिक
बनेन के लिये। हमारे पास फिर कितना धन होगा। हीरो मोतियों से तो बच्चे खेलते होगें। मन्दिरो मे हीरे
जवाहर लगाये है तो जरुर महलो मे भी होगें। ऐसे विश्व का तो तुम मालिक बन रहे हो। कितनी स्थाई
खुशी रहनी चाहिय। सुनेन देखने से ही दिल ठार हो जाती है। हम मालिक थे फिरअब बन रहे है। तुम बच्चे
बच्चो को तो अथाह खुशी होनी चाहिय। अभी उतनी कायमी खुशी नही है। माया सामना करती रहती है।
देह-अंहकार भी बहुत आ जाता है। माया भी रुसतम से ही रुस्तम होकर लड़ती है। पहलवान ही तो
पहलवान से लडेंगें नां। इसलिये बहुत खबरदार होकर रहना। गंभीर होकर रहना है। माया तो तैयार ही
****************** ********* ********
बैठी रहती है। देखेगी कौन योग मे पक्का होकर बैठा है उसीपर ही अटवार करेगी। तुम खुद भी कहते हो कि
घोरे मिसल याद खिसकती रहती है। पद भी तो बहुत ऊंचा है नां। कौन यह पद पा सकेंगें झट पता
पड जाता है। अभी तुम समझते हो कि माया कितनी प्रबल है। कोई को भी ऐस हरा लेती है तो जो कि
एकदम ही पट मे पड जाते है। इसमे कम्पेनियन आद की भी कोई बात नही है। हमको तो देह सहित
ही सभी कुछ भुलना है। कुछ भी याद नही रहे सिवाय एक बाप के। कम्पैनियन बनाया तो उसकी भी याद
बैठ जावेगी। भूल नही सकेंगें। यहां पर तो बाप कहते है कि सब कुछ भुलते ही जाओ। पिछाडी मे तो
अल्ला कोई की भी याद नही रहे तो ही प्राण तन मे से निकेल। ईतनी ऊंची मंजिल है। जरा भी याद आई
तो रामचन्द्र की तरह फेल हुआ। बाप युक्तियां तो बहुत बताते है। परन्तु अमल मे अभी नही लाते है। ओम